# अमर शहीद राजा रतन चन्द जी का जीवन वृतान्त

राजा रतन चन्द जी का जन्म सन् 1765 ई0 में महाराजा अग्रसेन जी के वंशज गोयल गोत्र में मौहल्ला मुकल्लमपुरा कस्बा मीरापुर तहसील जानसठ जिला मुजफ्फरनगर में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री जय लाल सिंह गोयल था जो अनाज के थोक विक्रेता का कार्य करते थे। राजा रतन चन्द जी ने बाल्यकाल में हिन्दी, उर्दू, मुण्डी प्रचलित भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। युवा होने पर पिता का व्यवसाय सम्भाला, जिससे उनकी कार्यकुशलता की ख्याति दूर–दूर तक फैल गयी।

राजा रतन चन्द जी के लेखा कार्य में दक्ष होने की चर्चा सुनकर सन् 1701 में सैयद बन्धुओं ने अपने यहाँ जानसठ में बुलाकर कोषाध्यक्ष नियुक्त कर दिया। यह प्रथा कालान्तर में राजवंशी बिरादरी के पास रही तथा जानसठ में सैयद बन्धुओं के अन्तिम कोषाध्यक्ष स्व0 श्री रामप्रसाद जी हुए।

ओरेंगजेब की सन् 1701 में मृत्यु तक हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचार अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच चुके थे। कोई हिन्दू मुगल शासन में उच्च पद पर आसीन नहीं था। सिक्खों पर भी अत्याचार हो रहे थे। अकबर के पश्चात् ज़जिया कर औरेंगजेब ने अपने शासनकाल में हिन्दुओं पर पुनः लगा दिया था।

औरेंगजेब की सन् 1707 में मृत्यु के बाद 1712 वध बहादूर शाह ने राज्य किया। उनकी मृत्यु के पश्चात् जहाँदर शाह तीन शहजादो पर विजयी होकर शहंनशाह बनने में सफल हुआ, लेकिन साथ ही फखरूशियर ने अपने पिता अजीम उषमान जो जहाँदर शाह के बड़े भाई थे उनको शहंनशाह के पद के लिए ऐलान कर दिया, लेकिन जल्द ही जहाँदर शाह

से युद्ध करते हुए अजीम उषमान मार दिये गये। इसके पश्चात् फखरूशियर ने सैयद बन्धुओं के आश्वासन के पश्चात् अपने आपको हिन्दुस्तान का शहंनशाह घोषित कर दिया। फखरूशियर की माँ सैयद हुसैन अली के पास गई तथा मदद की फरियाद की। सैयद हुसैन अली ने अपने भाई सैयद अब्दुला खाँ को भी सहायता के लिए राजी कर लिया।

सैयद बन्धु राजा रतन चन्द जी की दूरदर्शिता से प्रभावित थे, उनसे भी सलाह मशविरा लेते रहते थे। फखरूशियर के शहंनशाह की घोषणा के बाद युद्ध की तैयारी प्रारम्भ कर दी। जब जहाँदर शाह को यह सब मालूम हुआ तो उसने अब्दुल गफ्फार खाँ की कमाण्ड में एक सैना इलाहाबाद इस उपद्रव को दबाने के लिए भेजी। सैयद अब्दुला खाँ ने भी सैयद हुसैन अली की कमाण्ड में एक सेना जिसमें 3–4 हजार सैनिक थे, युद्ध में मुकाबले को भेज दी। दोनों फोजों में कटरा मानकपुर पर भयंकर युद्ध हुआ। अब्दुल गफ्फार खाँ की फौज में 12 हजार सिपाही थे। राजा रतन चन्द जी भी तीन–चार सौ घुड़सवारों की सेना को लेकर सैयद बन्धुओं की मदद के लिए पहुँच गये। सैयद हुसैन अली की फौज हारने लगी। जीती हुई फौज जीत की खुशी में लूटमार करने लगी, उसी समय अचानक अब्दुल गफ्फार खाँ की मौत की खबर फैल गयी। यह सुनते ही फौज में भगदड़ मच गयी। इस स्थिति का लाभ उठाकर राजा रतन चन्द जी ने जीत का बिगुल बजा दिया। इस प्रकार हार को जीत में बदल दिया।

इस पराजय के बाद जहाँदर शाह ने आगरे के समीप एक निर्णायक युद्ध प्रारम्भ कर दिया जिसमें सैयद अब्दुला खाँ की जीत हुई, बाद में जहाँदर शाह को गिरफ्तार कर फखरूशियर ने मरवा डाला।

फखरूशियर ने सैयद अब्दुला खाँ को वजीरे–ए–आजम तथा हुसैन अली को मुख्य सैनापति नियुक्त करर दिया। दोनों को रू0 7000/– का मनसब की घोषणा की तथा राजा रतन चन्द जी को दीवान के पद पर नियुक्ति के साथ साथ राजा का खिताब व रू0 2000/– का मनसब प्रदान किया। सैयद बन्धुओं के साथ–साथ राजा रतन चन्द जी का प्रभाव भी बढ़ गया तथा समस्त प्रशासनिक कार्य, सरकारी नौकरियों पर नियुक्ति करना व काजी नियुक्त करने के अधिकार भी राजा रतन चन्द जी के पास आ गये। इसका लाभ उठाकर राजा रतन चन्द जी ने औरेंगजेब द्वारा जारी क्रूर नीतियों को बदल दिया तथा जून 1713 ई0 में हिन्दुओं पर ज़जिया कर भी समाप्त करा दिया। प्रशासन में मुसलिमों के एकाधिकार को समाप्त कर हिन्दुओं को उच्च सरकारी पदों पर नियुक्त करना प्रारम्भ कर दिया।

राजा रतन चन्द जी काम पर इतने हावी हो गये कि दीवाने–ख़ास तथा दिवाने–वन दोनों मंत्री बेकार हो गये और उन दोनों को त्याग–पत्र देना पड़ा यह सब मुगलों की नीति के विपरीत माना जाता था।

राजा रतन चन्द जी ने अपने पुत्र की शादी पर विवाह अवसरों में फैली हुई कुरीतियों को समाप्त किया तथा समाज को सन्देश दिया कि आप सब भी समाज में फैली हुई कुरीतियों से दूर रहे। राजा रतन चन्द जी ने अपने बेटे हिम्मत सिंह गोयल के विवाह के पश्चात गिंदोड़ा बांटा कुछ ने लेने से इंकार कर दिया। बहुतों ने ले लिया, इस प्रकार कुछ वैश्य अग्रवाल अनुयायी हो गये। कुछ उनके विरूद्ध हो गये। जो कि उनकी तरक्की से द्वेश रखते थे।

इस प्रकार राजा रतन चन्द जी की बिरादरी का उदय हुआ। समर्थक/अनुयायी राजा शाही व आगे चलकर राजवंशी कहलाये, इन्हीं

व्यक्तियों को मुगल शासनकाल में सरकारी प्रशासनिक नौकरियों में विशेष स्थान रहा।

फखरूशियर के शासन काल में अहमदाबाद में हिन्दू मुसलमानों में होली जलाने के ऊपर विवाद हो गया। एक हिन्दू ने अपने मकान के आंगन में होली जलाने वाला था। बराबर के मकान में एक मुस्लिम रहता था उसने आपत्ति की। परन्तु हिन्दुओं ने उसकी परवाह न करते हुए होली जलाकर रस्म पूरी की। इस प्रकार मुसलमान अगले दिन मकान के चौक में एक गाय को मरवाकर डाल दिया और कहा आज अली का मृत्यु दिवस है, इसलिए इसका माँस गरीब मुसलमानों में बांटा जायेगा। इस घटना से हिन्दुओं को बड़ा क्रोध आया व सब एकत्रित होकर मुस्लिमों के विरूद्ध उठ खड़े हुए, मुसलमान अपने अपने घरों में डर कर छुप गये। हिन्दुओं ने उस कसाई का पता लगाने के लिए कसाई के घर पहुंच गये, जिसने गोवध किया था जब वह नहीं मिला तो उसके 14 वर्ष के पुत्र को बाहर घसीट कर उसी चौक में मार दिया। इस पर सब मुसलमान इक्कठ्ठे होकर काजी के पास गये उसने अपना दरवाजा बन्द कर लिया। झगड़ा बढ़ गया कपूर चन्द जौहरी हिन्दुओं का साथ देने आगे आये। मुसलमान समझते थे कि उनके साथ अत्याचार हुआ है उनके 3 व्यक्तियों को दरबार में शिकायत लेकर मुस्लिमों ने भेजा। उधर फौजदार दाऊद खाँ ने कपूर चन्द जौहरी को और साथ में काजी को व अन्य साहसी सैनिक अफसरों को दरबार में भेजा, कपूर चन्द को पूरा वृतान्त लिखकर दिया तथा इन्होंने दरबार में जाकर कहा हिन्दुओं ने नहीं मुसलमानों ने आक्रमण किया था। उधर मुसलमानों के तीनों प्रतिनिधि भी दरबार में पहुंच गये परन्तु राजा रतन चन्द जी के प्रभाव के वजह से उन तीनों को गिरफ्तार कर कारागार में डाल

दिया गया तथा उनकी शिकायत दबा दी गयी। यदि ख्वाजा मौहम्मद जफर नामक फ़कीर मुसलमानों की ओर से उनकी बात सुनकर अपने प्रभाव से उन्हें नहीं छुड़ाता तो वे तीनों निरपराध जेल में ही सडते रहते।

सन् 1716 में सिक्खों के नेता बन्दा बैरागी को उनके अनुयाइयों व सैनिकों सहित गिरफ्तार कर लिया तथा सिक्खों की धर्म परिवर्तन करने हेतु यातनाऐं व हत्याएं की जा रही थी । राजा रतन चन्द जी ने सैयद बन्दुओं की सहायता से व अपने प्रभाव से सिक्खों की रिहाई, अत्याचार रोकने हेतु कार्य किये।

राजा रतन चन्द जी की शक्ति बढ़ती चली गयी उनके अधीन फखरूशियर के शासन काल में न्याय, प्रशासन व राजस्व विभाग समस्त उनके अधीन हो गये थे तथा समस्त शासन उनके निर्देशानुसार चलने लगा यहाँ तक की उनकी बिना अनुमति के बादशाह तक भी कोई सीधे नहीं पहुंच सकता था।

सैयद बन्धुओं व राजा रतन चन्द जी के प्रभाव को बढ़ता देखकर विद्रोही अमीर व दरबारियों ने फखरूशियर को उकसाया। फखरूशियर ने इनायत उल्ला खाँ को दीवान व कश्मीर का सुबेदार बना दिया और उसे रू0 4000/— मनसब की पदवी दे दी। उसने आते ही शरियत का हवाला देते हुए पुनः हिन्दुओं पर ज़जिया कर लगवा दिया तथा हिन्दुओं की जागीरें व मनसब लेकर मुसलमानों को देने का विचार होने लगा। इन सब कारणों से राजा रतन चन्द जी को बहुत रोष हुआ। इनायत उल्ला खाँ ने राजा रतन चन्द जी के अधिकार को कम करने की तज़बीज बादशाह को पेश कर मंजूरी हासिल कर ली। सैयद बन्धुओं व फखरूशियर में शासन के संचालन कार्यों में मतभेद होने के कारण वेमनस्य इतना बढ गया कि

फखरूशियर सैयद बन्धुओं को रास्ते से हटाने व मारने की योजना बनाने लगा। राजा रतन चन्द जी ने व सैयद बन्धुओं ने आपस में विचार विमर्श किया व मराठों के सहयोग से फखरूशियर को बन्दी बनाकर मरवा दिया।

फखरूशियर की मृत्यु के पश्चात् एक समय ऐसा भी आया कि आगरे में राजा जय सिंह ने बगावत कर दी। राजा रतन चन्द जी ने अपने प्रयासों से बिना युद्ध के शांतिपूर्ण समझौता करा दिया। फखरूशियर की मृत्यु के पश्चात् सैयद हुसैन अली में आपसी मतभेद उत्पन्न हो गये। राजा रतन चन्द जी को सब जानकारी थी उन्होंने बीच में पड़कर समझाया व आपसी वेमनस्य समाप्त कराया जो उस समय की एक बडी आवश्यकता था।

तद्परान्त सैयद बन्धुओं ने सन् 1719 ई0 में बहादूर शाह के पोते रफी उहरजात को गदी पर बैठाया व सर्वप्रथम राजा रतन चन्द जी ने प्रथम बैठक में ही पुनः हिन्दुओं पर से ज़जिया कर राजा अजीत सिंह व सैयद बन्दुओं के सहयोग से समाप्त कराया।

रफी उहरजात जल्दी ही मर गया। 27 मई 1719 को उनका बड़ा भाई रफी ऊद्दौला को गददी पर बैठाया।

जौधपुर के महाराजा अजीत सिंह की पुत्री इंदिरा कुंवर जो फखरूशियर की महारानी थी को राजा रतन चन्द जी के सहयोग से महल से निकालकर पुनः हिन्दु रीति–रिवाज से हिन्दु धर्म में परिवर्तित कराकर महाराजा अजीत सिंह जौधपुर ले गये।

1719 ई0 में ही इलाहाबाद के सुब्बेदार गिरधर बहादूर ने विद्रोह कर दिया, तब सैयद अब्दुल्ला खाँ ने कई कमाण्डर भेजे काफी दिन लडाई चलती रही परन्तु सफलता नहीं मिली। अन्त में राजा रतन चन्द जी ने बड़ी सैना लेकर इलाहाबाद के लिए प्रस्थान किया तथा राजा रतन चन्द जी ने

अपनी कूटनीति व कार्यकुशलता व सूझ–बूझ से गिरधर बहादूर को अपने वश में कर बिना लड़ाई के समझौता कर लिया। इस सफलता के उपलक्ष्य में बड़ी धूमधाम से राजा रतन चन्द जी का स्वागत किया गया तथा उनका रूतबा बढाकर रू0 5000/– मनसब का पद कर दिया गया। व 5000 गुडसवार व एक विशेष पौशाक व रत्नजड़ित हार दिया।

तीन माह पश्चात रफी उद्दौला की भी मृत्यु हो गयी तथा सैयद बन्धुओं ने जहाँदर शाह के पुत्र मोहम्मद शाह को गददी पर बिठाया। समस्त राज्यसत्ता सैयद बन्धुओं के हाथ में ही थी। मोहम्मद शाह के समय में मीर जुमला प्रधान न्यायधीश और राजा रतन चन्द जी के सुपुर्द माली, आर्थिक व जुडिशियली मामले थे।

सिड़नी जे ओवर ने लिखा है किः– बादशाह प्रजा से मिलने के लिए खुला हुआ नहीं था। सैयदों ने अपने हाथ में सारी ताकत व जिम्मेदारी अपने हाथों में ले रखी थी। सैयद बन्धु राज संचालन हिन्दुस्तानी तरीको में बदल रहे थे। जो मुगलो को पसंद नहीं था। बगैर राजा रतन चन्द जी के मोहरी हुकम के कोई काम नहीं होता था।

सैयद बन्धु एवं राजा रतन चन्द जी निःसन्देह प्रबन्ध कार्यों पर बडे हावी थे परन्तु बादशाह के कृपा पात्र लोग जो सैयदों की नीति के खिलाफ रहते थे। उन पर प्रायः आक्षेप किया करते थे। सैयद बन्धुओं के दम्भपूर्ण व्यवहार में साम्राज्य के सब अमीर खिन्नः थे सारा माली काम राजा रतन चन्द जी के हाथ में तो था ही जो अमीरों को पसंद नहीं था। सभी विद्रोही सैयद बन्धुओं के पतन का प्रयत्न कर रहे थे।

08 अक्टूबर 1720 ई0 को फतहपुर से 35 मील दूर टोडा भीम केम्प पर एक षडयंत्र के के तहत छूरा घोंपकर सैयद हुसैन अली की हत्या कर

दी। तत्पश्चात राजा रतन चन्द जी को गिरफ्तर कर लिया गया और सैयद बन्धुओं के खजाने व सामूहिक सम्पत्ति बताने के लिए बार–बार अमानवीय यातनाएं दी गयी। उन्होंने कुछ भी बताने से इन्कार कर दिया। सैयद अब्दुल्ला खां ने सैयद हुसैन अली की हत्या के बाद बादशाह के विरूद्ध विद्रोह कर दिया। बादशाह ने अब्दुल्ला खां को भी युद्ध में घायल करवाकर गिरफ्तार कर जैल में डाल दिया। बादशाह मोहम्मद शाह के हुकम के अनुसार राजा रतन चन्द जी का सिर काटकर बतौर शगुन बादशाह के हाथी के सामने फेक दिया व हाथी के पैर के नीचे कुचलवा दिया।

इस प्रकार 13 नवम्बर सन् 1720 ई0 में एक महान प्रशासक का अन्त हो गया अनेक इतिहासकारों के विवरण से यह पुष्ट होता है कि राजा रतन चन्द जी उस युग के महान प्रशासक एवं प्रभावशाली व्यक्ति थे। अपनी तीव्र बुद्धि, दूरर्दिशता, कार्यकुशलता, न्याय प्रियता, प्रशासनिक योग्यता, स्वामी भक्त आदि गुणों के कारण ही उन्नति कर भारत के इतिहास में अपनी छाप छोड़ गये। उस समय राज्य की गम्भीर समस्याओं में उन्होंने मुगलों का का साथ दिया, अपने धर्म के लिए मौके–मौके पर बड़े–बड़े विकट कार्य कर दिखाए।

समाज सदैव उनको याद करता रहेगा।

**(हितेश राजवंशी)**
सदस्य केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल
एवं पूर्व केन्द्रीय महामंत्री
अ0भा0वै0अ0 राजवंश सभा